शाश्वत यौगिक खेती प्रदर्शनी

1- शाश्वत यौगिक खेती का उद्देश्य

हमारा भारत देश कृषि प्रधान देश है। भारत की संस्कृति कृषि आधारित संस्कृति है। हमारे देश के नेताओं ने नारा दिया - जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, परिणाम स्वरूप हमारे देश में हरित क्रान्ति, श्वेत क्रान्ति आई। लेकिन पाश्चात्य देशों के अंधानुकरण के फलस्वरूप नये-नये प्रकार की रसायनिक खादों वा जहरीली कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करने से धरती माँ की उर्वरक शक्ति का ह्रास होता गया। साथ-साथ खाद्य पदार्थो में रसायनों का दुष्प्रभाव जहर के रूप में फैलता गया, जिसके फल स्वरूप अनेक प्रकार की नई-नई मानसिक और शारीरिक बीमारियाँ होने लगी। मानसिक सन्तुलन बिगड़ने के कारण नैतिक पतन हुआ। ऐसी परिस्थितियों में पुन: अपने कृषक भाई-बहिनों को सच्चे रूप में हलधर (बलराम) वा गौपाल (श्रीकृष्ण समान) बनने की आवश्यकता है, जो चरित्रवान बनकर जय ईमान का नारा दें और आध्यात्मिक क्रान्ति द्वारा अपने देश को ऊंचे शिखर पर ले जा सकें। इसके लिए आवश्यकता है – उत्तम खाद, उत्तम बीज और उत्तम विचारों की। रसायनिक खादों (फर्टीलाइज़र) को त्याग कर गाय के गोबर, गऊ मूत्र, जैविक खाद व कम्पोस्ट खाद द्वारा अपनी धरती माँ की शक्ति को पुन: बढ़ाने में सहयोग दें। खेत में बोने वाले बीज को परमात्म शक्तियों की किरणों द्वारा सशक्त बनायें, जैविक द्रव्य के छिड़काव द्वारा पौधों का संरक्षण करें, साथ-साथ अपने शुभ चिंतन, शुभ भावना और शुभ कामना के प्रकम्पन्न द्वारा फंसलों को श्रेष्ठ संकल्पों के वायब्रेशन देकर उन्हें शक्ति प्रदान करें ताकि पुन: सात्विक अन्न द्वारा मन का परिवर्तन हो और हमारे भारत देश में सुख-शान्ति और समृद्धि का साम्राज्य आये। यही शाश्वत यौगिक खेती का मूल उद्देश्य है।

2- सर्वोच्च ऊर्जा द्वारा शाश्वत यौगिक खेती

इस अनादि अविनाशी सृष्टि चक्र में भिन्न-भिन्न ऊर्जायें निरन्तर गतिमान होती रहती हैं। यह सृष्टि नाटक तीन मुख्य सत्ताओं के आधार पर चलता रहता है। आत्मा, प्रकृति और परमात्मा ये तीनों ही अनादि सत्तायें इस नाटक की धुरी हैं। आत्मा जब सतोप्रधान स्टेज में सम्पूर्ण पावन है तब मन की श्रेष्ठ ऊर्जा प्रकृति के सभी तत्वों को सन्तुलन में रखती है। अत: आदिकाल में सतयुगी सृष्टि के प्रारम्भ में प्रकृति के सभी तत्व सुखदाई स्वरूप में मानव आत्मा की सेवा पर तत्पर रहते थे।

जिस प्रकार भौतिक जगत का विधिवत् संचालन करने में ग्रहों की ऊर्जा वा सौर ऊर्जा की अहम् भूमिका है। गृहों की ऊर्जा के आधार पर समुद्र में उतार चढ़ाव (ज्वार भाटा) आदि आते हैं। पवन ऊर्जा वा सौर ऊर्जा द्वारा वर्तमान समय अनेक कार्य सहज सफल हो रहे हैं। इसी प्रकार जब आत्मा अपने स्व स्वरूप और स्वधर्म में स्थित होती है और वह योग के माध्यम से स्वयं में परमात्म ऊर्जा को ग्रहण करती है जिससे कोई भी असम्भव कार्य सहज सम्भव हो जाता है। वह जब मन-बुद्धि को परमात्मा के साथ जोड़ती है तो उसे ब्रह्माण्ड (परमधाम) की ऊर्जा और परमात्मा की सर्वोच्च ऊर्जा प्राप्त होती है, जिसका विधिवत प्रयोग करने से सर्वप्रथम वह अपने विकारी पुराने संस्कारों को (आदतों को) परिवर्तन कर लेती है, जिससे कलियुगी संसार बदलकर सतयुगी संसार बन जाता है।

कृषक जब अपने मन के विचार तरंगों को परमात्मा के साथ एकाकार करता है तो उसका मन उस सर्वोच्च ऊर्जा से भरपूर हो जाता है और उससे निकलने वाले शुद्ध श्रेष्ठ और शक्तिशाली प्रकम्पन्न चारों ओर अपना प्रभाव डालते हैं। यदि वह अपनी खेती पर वा पेड़-पौधों पर मन की इस ऊर्जा को प्रवाहित करता है तो पेड़-पौधे वा बनस्पति उसकी श्रेष्ठ भावनाओं को सहज ग्रहण करके उसके रिटर्न में उसे पौष्टिक अन्न, फल, फूल वा सब्जियाँ देते हैं। यही शाश्वत यौगिक खेती का मर्म है।

3. गीत-संगीत का मानव तथा प्रकृति पर प्रभाव

प्रथम चित्र में दिखाया गया है कि विश्व के कई बड़े वैज्ञानिकों ने पेड़-पौधों पर गीत संगीत एवं नृत्य के प्रयोग किये हैं। उन्होंने एक ग्रीन हाउस में रॉक संगीत लगाया और दूसरे ग्रीन हाउस में भारतीय संगीत का प्रयोग किया, तो अलग-अलग परिणाम प्राप्त हुए। जहाँ रॉक संगीत लगाया गया था वहाँ के पेड़-पौधे उससे दूर भागने लगे और जहाँ भारतीय संगीत लगाया गया था, वहाँ पेड़-पौधे नजदीक आने लगे, तब उनको पता चला कि पेड़-पौधों में भी भावनाओं को समझने की संवेदना होती है। दूसरा प्रयोग उन्होंने जानवरों पर भी किया तथा पाया कि संगीत बजाने से गाय के दूध की मात्र बढ़ गई।

रॉक संगीत और भारतीय संगीत में मुख्य अन्तर यही पाया गया कि रॉक संगीत देह-अभिमान से प्रेरित है जिसे सुनने से मनुष्यात्मायें बाह्यमुखी हो जाती हैं जबकि भारतीय संगीत आध्यात्म से है जो अन्तर्मुखी बना देता है।

चित्र के मध्य में दर्शाया गया है कि देह भान में आने से जीवन रूपी वृक्ष सूख जाता है क्योंकि हर कर्म काम क्रोध लोभ मोह अहंकार आदि विकारों के वशीभूत होकर किये जाते हैं और आत्म अभिमानी बनने से जीवन रूपी वृक्ष में हरियाली आ जाती है क्योंकि इस स्थिति में हर कर्म श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न समता, शान्ति, पवित्रता, सन्तुष्टता में रहकर किया जाता है जिससे उसके जीवन में विधायक प्रवृत्ति (निर्माण करने वाली प्रवृत्ति) निर्मित हो जाती है।

4- प्रकृति और मानव

इस सृष्टि पर मुख्य रूप से दो शक्तियाँ कार्यरत हैं। एक है मानव और दूसरा है प्रकृति। जब दो सहकर्मियों का स्वभाव समान होता है तो दोनों में मेल-जोल होता है। स्वभाव में भिन्नता होने से कष्ट तथा अकल्याण का वातावरण बन जाता है। प्रकृति आज भी वरदानी है। प्रकृति के 5 तत्वों में से अग्नि ने हमें ऊर्जा और प्रकाश दिया, वायु ने प्राण दिये, आकाश ने उड़ान दी, धरती माँ ने अनाज दिया, बूंद-बूंद पानी ने हरियाली दी, इस तरह से यह प्रकृति जनजीवन को बनाये रखती है। परन्तु इन सभी के बीच मानवीय प्रवृत्ति, प्रकृति से भिन्न होती जा रही है। जैसाकि चित्र में दिखाया गया है जब तक मनुष्य के अन्दर प्रकृति के प्रति श्रृद्धा भावना थी वह प्रकृति को सम्मान देता था, श्रृद्धापूर्वक खेती-बाड़ी, पशुपालन आदि करता था। भूमि को माता के समान जीवन्त समझता था। तब तक मानव और प्रकृति के बीच आदान-प्रदान का चक्र भी ठीक रीति से चलता था। जैसे जमीन गंदगी, खाद आदि का उपयोग करके अनाज देती है, उस अनाज को मनुष्य जानवर, पक्षी आदि खाकर हष्ट-पुष्ट होते हैं। इन सबके शरीरों से जो वेस्टेज निकलती है, उसे जमीन पुन: अपने में समाकर रूपान्तरण कर देती है और अनेक प्रकार के फूल-फल अनाज मनुष्य को देती है, इस प्रकार यह चक्र चलता रहता है। परन्तु जैसे-जैसे

मानवीय भावना देने के बदले लेने वाली बनती गई, प्रकृति पर मानवीय कुकर्मों का आक्रमण होने लगा। मानव द्वारा फेंका गया कचरा, कारखानों से निकलने वाला धुआं, वायु प्रदूषण और एसिड की बारिश का निमित्त कारण बना। जंगल काटकर सृष्टि को बंजर बना दिया, मानव में हिंसक प्रवृत्ति बढ़ने लगी। अन्न का उत्पादन बढ़ाने, पैसा अधिक कमाने के लिए स्वार्थवश वह पौधों पर विषैले द्रव्यों से भरे फव्वारे मारने लगा। इससे प्रकृति में रहने वाले जीव-जन्तु तथा मनुष्य की भी अपरिमित हानि होने लगी क्योंकि ये सारा विश्व पारस्परिक संबंधों के आधार पर खड़ा है। हमें आपसी सम्बन्धों के इस विज्ञान को जानना है। जैसे ही यह सुसंवाद खत्म हो जाता है, वैसे ही विनाश की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। इसमें कोई संदेह नहीं है, इस विश्व के अन्दर कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जो निरुपयोगी हो। गूढ़ और दिव्य ऊर्जा से भरे हुए हैं। विश्व की हर वस्तु, व्यक्ति इनमें जो यह शक्ति भरी है वह क्या है और किसकी है, इसे जानने के लिए हमें सृष्टि के आरम्भ की ओर जाना होगा।

5. परमात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापित होने से श्रेष्ठ भावनाओं का उदय होता है।

जब आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध जुटता है तब हमारी वृत्ति-दृष्टि एवं स्थिति में परिवर्तन आता है इससे आत्मीयता, प्रेम एवं अपनेपन की भावनाओं का विकास होता है, जो कर्म एवं सम्बन्ध में स्पष्ट दिखाई देता है। इसी प्रकार शुद्ध विचार एवं भावनात्मक सम्बन्धों से मनुष्य और पेड़-पौधों के बीच में भी रिश्ता बन जाता है। किसान जब परमात्म शक्तियों से प्रेरित होकर खेत में हल चलाता है, बीज बोता है तो उसके शुद्ध संकल्पों का प्रभाव उत्तम फसल के रूप में दिखाई देता है, जिससे स्व के साथ-साथ विश्व की भी सेवा हो जाती है।

6. आत्मा और प्रकृति का रहस्य जानने से ईश्वरीय अनुभूति

चित्र में कल्प वृक्ष के मध्य योगी दर्शाया गया है। मनुष्य, प्रकृति और चेतना दोनों का मिला हुआ स्वरूप है। उसे दोनों का पूरा ज्ञान होना चाहिए। जब वह आत्मिक स्वरूप में स्थित होता है तो ज्ञान, गुण और शक्तियों का स्रोत बन जाता है, ये ही शक्तियाँ पूरे वृक्ष में प्रवाहित होती है।

जैसे प्रकृति के प्राणी मात्र एक दूसरे के ऊपर निर्भर हैं। वनस्पति को शाकाहारी प्राणी खाती है, उनको फिर हिंसक प्राणी खाते हैं और हिंसक प्राणियों की हिंसा स्वार्थ के वश देह-अभिमानी मनुष्य कर देते हैं। परन्तु प्रकृति का स्वाभाविक गुण है देना जबकि मानव आत्मा अपने इस गुण को खोकर स्वार्थ वृत्तियों के कारण हिंसक बन गई है जिससे वर्तमान सृष्टि का सन्तुलन बिगड़ चुका है। अब पुन: इसे सन्तुलन में लाने के लिए स्व-स्वरूप को पहचानना होगा।

उदाहारण के रूप में साथ के चित्र द्वारा स्पष्ट किया गया है कि जैसे वृक्ष के बीज की केन्द्र जड़ होती है, वह जड़ से ही हर आवश्यकता की पूर्ति करता है। सूर्य की किरणें उसे बाहर से शक्तियाँ प्राप्त कराती हैं जिससे सम्पूर्णता को प्राप्त कर वह वास्तविक बीज रूप में पुन: पहुंच जाता है। ऐसे जब हम कल्प वृक्ष की जड़ में ज्ञान स्वरूप स्थिति में बैठते हैं तो पूरे वृक्ष को शक्तियाँ दे सकते हैं।

यही राजयोग की विधि है कि हम अपनी वृत्ति, दृष्टि और स्थिति को पवित्र व श्रेष्ठ बनाकर अपने सूक्ष्म स्वरूप में स्थति होकर परमात्मा से शक्तियाँ खींचकर जीवन रूपी वृक्ष में गुण रूपी पुष्प एवं शक्ति रूपी फलों की प्राप्ति कर सकते हैं।